

## प्रशंसिका ने दिल खोल कर चूत चुदवाई-4

“उसकी चूत चूमने मात्र से ही उसने अपनी टांगों को फैला दिया, अब उसकी चूत बिल्कुल स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी, दोनों फांकों को खोलते हुए उसकी गुलाबी चूत के अन्दर मैंने अपनी जीभ डाल दी। ...”

Story By: शरद सक्सेना (saxena1973)

Posted: Monday, March 21st, 2016

Categories: [कोई मिल गया](#)

Online version: [प्रशंसिका ने दिल खोल कर चूत चुदवाई-4](#)

## प्रशंसिका ने दिल खोल कर चूत चुदवाई-4

मूतने के बाद मैंने अपना लोअर पहना और रचना से बोला- अब मुझे ऑफिस भी जाना है, तुम भी अपना काम निपटा लो, फिर शाम को मिलते हैं। और तुम्हारी झांट भी बनाते हैं। कह कर मैं अपने रूम में आ गया और तैयार होकर ऑफिस आ गया।

दोस्तो, मैं अपनी झांट बनाने के लिये रेजर का ही प्रयोग करता हूँ लेकिन गांड के आस-पास के बाल को साफ रखने के लिए वीट भी रखता हूँ। इसलिये उसकी झांट बनाने के लिये मुझे कोई दिक्कत नहीं होती क्योंकि सफर के दौरान शेविंग करने के लिये मैं अपने साथ शेविंग किट रखता हूँ।

ऑफिस ने मुझे 3-4 दिन के लिये स्टे करने को कहा क्योंकि कुछ टेकल प्रॉब्लम थी और उसे सॉल्व करना भी जरूरी भी था। मुझे ऑफिस की तरफ से जितने दिन दिल्ली में रहना होगा उसका सब खर्चा मिल रहा था, लेकिन मुझे ऐसी जगह चाहिये थी, जहाँ मैं अपनी प्राईवैसी के साथ रहूँ। उसके कारण यह था कि रचना मेरे साथ थी।

मैंने फोन पर रचना को अपने काम की वजह से रूकने के कार्यक्रम के बारे में बताया तो वो भी मेरे साथ रूकने को तैयार थी क्योंकि उसे भी एक बड़ी कम्पनी में जॉब मिल गई थी और उसे भी अपने लिये ऐसा कमरा देखना था जो उसकी कम्पनी से चार से पाँच किमी ही हो।

ऑफिस के एक साथी से अपनी समस्या बताई तो उसने ऑफिस के पास ही एक कमरा दिखाया जो कि रचना के ऑफिस से भी दो किमी की दूरी पर था। रचना को बता कर उसके लिये रूम फाइनल कर दिया और अपना भी जुगाड़ कर लिया और शाम को काम निपटा कर मैं होटल पहुँचा तो रचना भी आ चुकी थी।

एक बार फिर रचना को मैंने पूरी डिटेल् दी और उसके होठों को चूमते हुए बोला- जानेमन,

हम लोग खूब मस्ती करेंगे। मुझे ऑफिस में केवल तीन से चार घंटे का ही काम होगा। उतनी देर चाहो तुम घूम लेना या फिर लेपटॉप पर बैठ कर बी.एफ. देखना ताकि चोदम-चोदाई के खेल का और मजा आये।

रचना ने तुरन्त मेरी बात मान ली और मेरे कहने पर उसने अपने घर पर फोन लगा कर तीन से चार दिन बाद आने की बात कही। फिर हम लोगों ने तुरन्त ही अपना सामान समेटा और होटल से चेक आउट कर लिया।

रास्ते में मैंने पाँच बीयर की केन खरीद ली और खाना पैक करा लिया। हम लोग थोड़े ही देर में रूम में पहुँच गये।

उसके मोटापे के कारण मैंने उसके पहनावे पर ध्यान ही नहीं दिया। पर जब हम लोग रूम की तरफ जा रहे थे तो उसने जीन्स और टॉप पहन रखा था। उसके बाल काफी लम्बे और घने थे, गोल चेहरा था और बाकी जिस्म काफी मोटा था, जांघें भी इतनी मोटी थी कि आपस में बिल्कुल चिपकी हुई थी और इससे उसकी चूत भी छिप जाती थी।

खैर! हम लोग रास्ते में एक-दूसरे के बारे में जानते रहे और दोनो एक दूसरे की कभी जांघों को सहलाते तो कभी मैं उसकी योनि प्रदेश को और वो मेरे लंड को सहलाती, ऐसा करते-करते थोड़ी ही देर में हम लोग रूम पहुँच गये।

हम दोनों के ऊपर वासना सी सवार थी।

जैसे ही सामान रखने के बाद दरवाजा को लॉक करके मैं मुड़ा, रचना मेरे से चिपक गई। चूँकि उसकी लम्बाई कम थी तो वो मेरे सीने तक ही आ पा रही थी।

अपनी लरजती आवाज में वो बोली- शरद, जब तक हम लोग यहाँ हैं, मैं तुम्हारी गुलाम हूँ, जैसा तुम बोलोगे, वैसा ही मैं करूँगी।

मैंने भी जोश में कह दिया- जब तक हम दोनों यहाँ हैं, हम लोग एक दूसरे के गुलाम हैं, जो

मैं बोलूँगा वो तुम करना, और जो तुम बोलोगी, वो मैं करूँगा, हम लोग जितनी समय तक इस कमरे में रहेंगे, कोई कपड़ा नहीं पहनेगा।

कहकर मैंने उसके होंठों को अपने होंठों से जकड़ लिया और अपने थूक को उसके मुँह में डाल दिया जिसे वो बिना कुछ बोले गटक गई।

उसके बाद दोनों ने एक दूसरे के कपड़े उतार दिए, दोनों ही पूर्ण रूप से नग्न हो चुके थे। मैं उसके बालों से युक्त योनि प्रदेश में अपनी उँगली घुमा रहा था।

मेरे सामने शराब, कवाब और शवाब तीनों ही थे और अब उसका सम्भोग ही करना था।

लेकिन सबसे पहले मुझे अपने शवाब की चूत को चिकना करना था तो मैंने बैग से वीट की ट्यूब निकाली और उसकी चूत के चारों ओर लगा दी।

मुझे चार से पाँच मिनट का इंतजार करना था ताकि उसकी चूत साफ कर सकूँ।

मैंने खाने के पैकेट में से चिकन को टेबल में सजाया और दो केन की बोतल खोली एक उसको दी पर उसने लेने से मना किया, लेकिन मेरे कहने पर पीने लगी।

पाँच मिनट में हम दोनों ने केन को खत्म कर दिया, मैं देख रहा था कि रचना शुरू में असहज सी थी, लेकिन दो चार घूंट के बाद वो भी मेरा बढ़िया साथ देने लगी।

पाँच मिनट बीत चुके थे, अब बारी थी रचना की झांटों को साफ करने की, पर समस्या यह थी कि उसकी चूत को साफ करने के लिये न तो कोई रूई दिख रही थी और न ही कोई कपड़ा दिखाई दे रहा था।

अब मैं क्या करूँ ?

तभी मेरा ध्यान रचना की पैन्टी और मेरी चड्डी पर गया, मैंने दोनों की चड्डी का प्रयोग किया।

साबुन से धोने के बाद उसकी चूत गुलाबी सी दिख रही थी, क्या फूली हुई चूत थी उसकी, बिल्कुल पाव रोटी जैसी।

रचना को शीशे के सामने खड़ा किया, अपनी चूत को देख कर वो मुस्कुराने लगी।

तुरन्त ही मैंने पास पड़ी हुई बियर की बोतल उठाई और रचना को शीशे के सामने ही खड़े रहने के लिये कहकर अपने बैग से दो गिलास ले आया और गिलास को उसकी चूत पे लगा कर बियर को उसकी चूत से गिरा कर गिलास भरने लगा।

रचना मेरे अब किसी बात का विरोध नहीं कर रही थी, शायद उसे भी मजा आने लगा था, दोनों गिलास भर दिए उसकी चूत चाट कर साफ की और गिलास उसकी ओर बढ़ाया उसने गिलास लिया, मेरे लंड को उसमें डूबो दिया और लंड को चूसने के बाद बोली- अब पीने का मजा आयेगा।

शीशे के सामने खड़े होकर एक दूसरे से चिपके हुए बीयर पीने लगे, बीयर पीने के बाद हम लोगों ने खाना खाया।

इतनी देर तक हम दोने नंगे रहे और दोनों के बीच शर्म खत्म हो चुकी थी... विशेष रूप से रचना की।

रचना ने ही मुझे ऑफर दिया- चलो देखते हैं कि कौन कितना मूतता है।

मैंने उससे पूछा- कैसे ?

तो उसने वहीं पर पड़े गिलास जिसमें बीयर पी थी, उठाए और मेरा हाथ पकड़ कर बाथरूम में आई, मुझे पकड़ाते हुए और अपनी आँख को मटकाते हुए बोली- मैं मूतूंगी तुम नापना और तुम मूतोगे तो मैं नापूंगी।

मुझे उसकी बात सुनकर एक मस्ती सी छा गई, मैंने बिना प्रति उत्तर देते हुए गिलास को उसकी चूत से सटा दिया वो धीरे-धीरे मूतने लगी, पूरा एक गिलास भर दिया अपनी मूत से और फिर अपने होंठो को चबाते हुए बोली- इससे ज्यादा मूत कर दिखाओ तो जीत तुम्हारी।

उसने दूसरा गिलास लिया और मेरे लंड को पकड़ कर मेरे लन्ड के नीचे लगाया और मुझे मूतने को कहा। आधा गिलास से थोड़ा ज्यादा ही भर पाया था मेरे मूत से।

मैं उससे बोला- तुम जीती, अब तुम जो कहोगी वो मैं करूँगा।

मेरे लंड के टोपे को चाटते हुए बोली- नहीं जानू तुम मुझे ऐसी ही इतना सुख दे रहे हो कि किसी और चीज की जरूरत नहीं है।

फिर हम बिस्तर पर आ गये। इतनी देर में मेरा मेरा लंड इतना अकड़ गया कि जैसे ही मैं पलंग पर लेटा और रचना ने मेरे लंड को दो या तीन बार ही अपने मुँह में लिया होगा कि मेरा माल बाहर आ गया।

यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !

पहली बार मुझे किसी को सॉरी बोलना पड़ा, मुस्कराते हुए रचना बोली- कोई बात नहीं! कहकर चादर से लंड साफ करने जा रही थी, मैंने उसे रोका और मुँह से साफ करने को बोला।

तभी रचना बोली- यार इसको चाटूँगी तो मुझे उल्टी हो जायेगी।

‘कोशिश करो... अगर लगे कि उल्टी होगी तो मत करना...’ कहकर मैंने लंड की खाल को नीचे खींचा और उसने अपने जीभ को हल्के से सुपाड़े में रखा, फिर नीचे की तरफ आकर वो धीरे-धीरे चाटने लगी।

मुझे लगा कि वो असहज महसूस कर रही है और शायद मेरी बात रखने के लिये भी चाट रही थी, मैंने उसे चाटने के लिये मना किया पर वो मानी नहीं और मेरे वीर्य की धार जहाँ जहाँ मेरे जिस्म में गिरी थी, यहाँ तक कि वीर्य का कुछ अंश मेरी गांड में चला गया था, उसने वहाँ भी चाट के साफ कर दिया।

फिर वो मेरे ऊपर आई और मेरे होंठों को चूसने लगी। मेरा माल निकलने से मैं कुछ ढीला सा पड़ गया। लेकिन फिर भी मैंने उसे यह समझने का मौका ही नहीं दिया और तुरन्त ही

उसके अपने नीचे किया और उसके होंठों को चूसते हुए मैं उसके पूरे जिस्म को चाटने लगा। मैंने उसकी चूची को दबाते हुए उसकी कांख को, फिर गर्दन के आस-पास उसके बाद नीचे उतरते हुए उसकी गहरी नाभि के बीच अपनी जीभ फंसा दी, ऐसा करने से धीरे-धीरे मेरे में भी उत्तेजना बढ़ने लगी।

इधर मैं जैस-जैसे उसके जिस्म को चाट रहा था, उसकी हालत भी खराब होने लगी थी, उसके मुँह से आह...हो... आह... की आवाज आने लगी थी।

अब मुझे भी उसको उसकी सबसे अच्छी जगह यानि की उसकी चूत का अहसास कराना था, इसलिये मैंने उसकी दोनों टांगों को सिकोड़ा और दोनों को चौड़ा करके चूत तक पहुँचने की जगह बनाई फिर उसके मुलायम चूत को बड़े ही प्यार से चूमा।

उसकी चूत चूमने मात्र से ही उसने अपनी टांगों को फैला दिया, अब उसकी चूत बिल्कुल स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी, दोनों फाँकों को खोलते हुए उसकी गुलाबी चूत के अन्दर मैंने अपनी जीभ डाल दी।

ओफ्फ... आह... ओफ्फ की आवाज आ रही थी रचना के मुँह से!

मैं बड़े ही मजे से उसकी चूत चाट रहा था और पुतिया को हल्के हल्के काट लेता था।

रचना मेरे बालों को सहलाते हुए अपनी चूत को चटवाते हुए मेरा हौसला अफजाई कर रही थी।

अभी तक मैं उसके चूत को ऊपर से ही चाट रहा था, लेकिन अब मेरी जीभ उसके छेद के अन्दर जा घुसी। जहाँ मेरी जीभ का इंतजार उसकी योनि का रस कर रहा था।

इसका मतलब उसने भी पानी छोड़ दिया था।

पूरा रस चूसने के बाद उसकी जांघों को चाटा, इतनी देर तक चूत चूसाई के बाद मेरा लंड फिर तन कर खड़ा हो गया।

अब बारी धक्के देने की थी, मैंने लंड को उसके चूत पर सेट किया और एक तेज धक्का

लगाया ।

आहहह हहहह... की एक आवाज निकली, मेरा आधे से ज्यादा लंड अन्दर जा चुका था ।

मेरी तरफ देखते हुए रचना बोली- यार, जैसे पहली बार मेरी चूत के अन्दर लंड डाला था उसी तरह डालो ।

मैं उसकी बात मानते हुए लंड को धीरे धीरे आगे पीछे करके उसकी चूत में जगह बनाते हुए डालने लगा ।

जब पूरा लंड अन्दर चला गया और चूत उसकी ढीली हो गई तो अब स्पीड बढ़ने लगी, फच फच की आवाज और रचना की आह ओह की आवाज अब पूरे कमरे में सुनाई देने लगी ।

पाँच-छः : मिनट बाद ही मेरे लंड में चिपचिपा लगने लगा जिसका मतलब था कि रचना झड़ चुकी थी ।

मैं भी झड़ने वाला था, अब मैं उसके ऊपर लेट कर उसे चोद रहा था वो मेरे चूतड़ को दबा रही थी ।

‘डार्लिंग...’ मैंने कहा- झड़ने वाला हूँ, क्या करूँ ?

वो बोली- झड़ने वाला हूँ मतलब ?

मैंने कहा- मेरा निकलने वाला है ।

वो कुछ बोलती, इससे पहले मैंने पिचकारी छोड़ दी और मेरा पूरा माल उसके अन्दर समा गया ।

मैंने उसको कस कर अपनी बाँहों में दबा लिया, जब मेरे रस की एक-एक बूँद निचुड़ गई तो मैं ढीला पड़ गया वो मुझे अपने ऊपर से हटाते हुए उठ कर बैठी और बोली- मुझे ऐसा लगा कि मेरे अन्दर गर्म-गर्म लावा गया है, ये क्या था ?

‘यह मेरा माल था...’ कहकर मैं उसकी तरफ देखने लगा ।



उसने मेरी तरफ देखा और मुस्कराते हुए मेरे सीने पर अपना सिर रख दिया- मुझे नहीं मालूम था कि तुम बर्दाश्त नहीं कर पाओगे। फिर भी कोई बात नहीं, बच्चा नहीं ठहरेगा। मैं उसकी बात सुनकर थोड़ा रिलेक्स हुआ।

रचना अपनी एक टांग को मेरे टांग के ऊपर चढ़ाते हुए मेरे सीने के बालों से अपनी उंगलियों से खेलने लगी।

थोड़ी देर हम लोग शांत पड़े थे, केवल वो मुझे सहला रही थी और मैं उसके पीठ को या फिर उसके चूतड़ को और बीच बीच में उसके चूतड़ की दरार में भी उँगली चला रहा था।

कहानी जारी रहेगी।

आपका अपना शरद

saxena1973@yahoo.com

